Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Lib-1-12-23-(EVE) KMV 14

Exam Code: 222801 | Paper Code: 1165

Programme: Master of Arts (Hindi) Semester- I

Course Title: आधुनिक हिंदी काव्य: द्विवेदीयुगीन एवं छायावाद

Course Code: MHIL- 1261

Time: 3 Hours | Max. Marks: 70

नोट : यह प्रश्न पत्र चार भागों में विभाजित है | परीक्षार्थी के लिए प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है| पांचवा प्रश्न विद्यार्थी किसी भी भाग में से कर सकता है |प्रत्येक प्रश्न के लिए निर्धारित अंक 14 हैं | प्रत्येक उत्तर 1000शब्दों में दें |

भाग - एक

1. **निम्नलिखित पद्यांशों की व्याख्या करते हुए उसके काव्य वैभव पर प्रकाश डालें |**

उज्ज्वल वरदान चेतना का,
सौंदर्य जिसे सब कहते हैं
जिसमें अनंत अभिलाषा के,
सपने सब जगते रहते हैं।

अथवा

"धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका,
वह एक और मन रहा राम का जो न थका,

2. **निम्नलिखित पद्यांशों की व्याख्या करते हुए उसके काव्य वैभव पर प्रकाश डालें |**

स्वर्ग से भी आज भूतल बढ़ गया,
भाग्यभास्कर उदयगिरि पर चढ़ गया।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

हो गया निर्गुण सगुण-साकार है;
ले लिया अखिलेश ने अवतार है।
किस लिए यह खेल प्रभु ने है किया?
मनुज बनकर मानवी का पय पिया?
भक्त-वत्सलता इसीका नाम है।

अथवा

अब, सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पायी खुशबु, रंग-ओ-आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा है केपीटलिस्ट!

भाग - दो

3. साकेत महाकाव्य के आधार पर उर्मिला के विरह एवं संताप को व्याख्यायित करें।

4. मैथिलीशरण गुप्त भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय चेतना के अप्रतिम गायक है स्पष्ट करें।

भाग - तीन

5. छायावाद के वैशिष्टय पर प्रकाश डालें।

6. कामायनी के महाकाव्यत्व पर अपना मत प्रस्तुत करें।

भाग - चार

7. सरोज स्मृति बेबस पिता का शोक गीत है स्पष्ट करें।

8. निराला की प्रयोगधर्मिता को स्पष्ट करें।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Exam Code: 222801 **Paper Code: 1166**

Programme: Master of Arts (Hindi) Semester-I

Course Title: Hindi Sahitya Ka Itihaas

Course Code: MHIL-1262

Time: 3 Hours **Max. Marks: 70**

नोट: प्रत्येक इकाई से कम से कम एक प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। पाँचवाँ प्रश्न किसी भी इकाई से किया जा सकता है। प्रत्येक प्रश्न 14 अंकों का है। प्रत्येक प्रश्न 1000 शब्दों में होना चाहिए।

इकाई एक

प्रश्न: 1 हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की समृद्ध परंपरा रही है; स्पष्ट करें।

प्रश्न: 2 आदिकाल के नामकरण के संबंध में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं आचार्य रामचंद्र शुक्ल का मत प्रस्तुत करें।

इकाई दो

प्रश्न: 3 आदिकालीन सामाजिक एवं राजनीतिक परिदृश्य का उल्लेख करें।

प्रश्न: 4 सिद्ध एवं जैन साहित्य की उपादेयता की समीक्षा कीजिए।

इकाई तीन

प्रश्न: 5 निर्गुण काव्य धारा में संत कबीरदास के अवदान पर चर्चा करें।

प्रश्न: 6 सूरदास का वात्सल्य वर्णन स्पष्ट करते हुए कृष्ण काव्यधारा की प्रवृतियों पर प्रकाश डालें।

इकाई चार

प्रश्न: 7 रीतिकाल की प्रवृत्तियां स्पष्ट करें।

प्रश्न: 8 रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवियों का उल्लेख करते हुए उनकी स्वच्छंदप्रियता एवं लोकसंपृक्ति का वर्णन करें।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Exam Code: 222801 Paper Code: 1167

Programme: Master of Arts (Hindi) Semester-I

Course Title: Bhartiya Kavyshastra Evam Sahityalochan

Course Code: MHIL-1263

Time: 3 Hours Max. Marks: 70

नोट: प्रत्येक इकाई से कम से कम एक प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। पाँचवाँ प्रश्न किसी भी इकाई से किया जा सकता है। प्रत्येक प्रश्न 14 अंकों का है। प्रत्येक प्रश्न 1000 शब्दों में होना चाहिए।

इकाई-एक

1. काव्य लक्षण से क्या तात्पर्य है? विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रदत्त काव्य लक्षणों की चर्चा करें।
2. काव्य तत्व को रेखांकित करते हुए काव्य तत्वों का उल्लेख करें।

इकाई-दो

3. रस के सन्दर्भ में साधारणीकरण की व्याख्या करें।
4. अलंकार संप्रदाय की चर्चा करते हुए अलंकार सिद्धांत की मूल स्थापनाएं बताएं।

इकाई-तीन

5. ध्वनि काव्य के प्रमुख भेदों की सौदाहरण चर्चा करें।
6. रीति सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए रीति के संदर्भ में काव्य गुणों को स्पष्ट करें।

इकाई-चार

7. मनोविश्लेषणवादी आलोचना पद्धति की सैद्धांतिक संरचना व्याख्यायित करें।
8. औचित्य से क्या अभिप्राय है, काव्य ने औचित्य के स्थान और महत्व को रेखांकित करें।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Exam Code: 222801 **Paper Code: 1168**

Programme: Master of Arts (Hindi) Semester-I

Course Title: Prayojanmoolak Hindi

Course Code: MHIL- 1264

Time: 3 Hours **Max. Marks: 70**

आवश्यक निर्देश: यह प्रश्नपत्र चार भागों में विभाजित है। कुल 5 प्रश्नों का उत्तर देना है।प्रत्येक भाग में 14-14 अंकों के 2- 2प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से 1-1 प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में देना होगा। पांचवां प्रश्न विद्यार्थी चारों भागों में कहीं से भी कर सकता है।

भाग –I

1 टीप,टिप्पणी और टिप्पण का अंतर स्पष्ट करते हुए टिप्पण के गुणों /विशिष्टताओं पर विस्तार से और सोदाहरण विवेचन करें।

2 पल्लवन की परिभाषा देते हुए अच्छे पल्लवन की विशेषताएं लिखें।

भाग –II

3 इंटरनेट के संपर्क उपकरणों का परिचय दे और बताएं कि इसका रख रखाव कैसे किया जाता है?

4 कंप्यूटर के क्षेत्र, उपयोगिता, और उसके प्रकार लिखें।

भाग –III

5 पारिभाषिक शादावली के गुण और विशेषताएं बताएं।

6 हिंदी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल और पैकेज का परिचय दें।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

भाग –IV

7 निम्नांकित परिभाषिक शब्दों के अर्थ लिखें:-

Layout, Allowance, Disabled vehicle, Terminus, Computing machine, Overcharge, Inward traffic, affected train, Fare table, Unmanned, Destination station, Goods office, Monthly ticket, Home signal.

8 निम्नांकित कार्यालयी टिप्पणियों के अर्थ लिखें:-

May be filed

May be sanctioned

May be regretted

No objection certificate may be given

Ok

Please issue

Please do the needful

Please advise all the officers

Please find the enclosed copy

Office may note it carefully.

On leave/tour

Not concerning us

Noted, Thanks

No decision has so far been taken in this matter

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Exam Code: 222801 Paper Code: 1169

Programme: Master of Arts (Hindi) Semester- I

Course Title: हिन्दी नाटक और रंगमंच

Course Code: MHIL- 1265 (विकल्प – एक)

समय: 3 घन्टे कुल अंक: 70

नोट: यह प्रश्न पत्र चार भागों में विभाजित है। भाग एक, दो,तीन,चार में 14 -14 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे गए हैं । जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक- एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । पांचवां प्रश्न विद्यार्थी किसी भी भाग में से कर सकता है । प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों में देना होगा।

भाग – एक

1. निम्नलिखित गद्यांशो में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या करें:

क) चने जोर गरम-

चने बनावैं घासीराम।
चना चुरमुर चुरमुर बौलै।
चना खावै तौकी मैना।
चना खायं गफूरन मुन्ना।
चना खाते सब बंगाली।
चना खाते मियाँ- जुलाहे।
चना हाकिम सब जो खाते।
चने जोर गरम-टके सेर।

ख) रानी, तुम भी स्त्री हो, क्या स्त्री की व्यथा नहीं समझोगी? आज तुम्हारी विजय का अंधकार तुम्हारे शाश्वत स्त्रीत्व को ढक ले, किंतु सबके जीवन में एक बार प्रेम की दिपावली जलती है। जली होगी अवश्य। तुम्हारे भी जीवन में वह आलोक का महोत्सव आया होगा, जिसमें हृदय हृदय को पहचानने का प्रयत्न करता है, उदार बनता है और सर्वस्व दान करने का उत्साह रखता है। मुझे शकराज का शव चाहिए।

ग) लेकिन प्रेम की विडंबना ही यही है कि प्रेम-संबंधों में दुराव आने के बावजूद उसकी एक धुंधली रौशनी जीवन में बनी रहती है। प्रेम में समपर्ण और त्याग होता है। कोमा का प्रेम भी शकराज के प्रति समर्पण और त्याग है इसलिए शकराज के तिरस्कार के बाद भी उसकी मृत्यु होने पर कोमा शव माँगने ध्रुवस्वामिनी के पास पहुँच जाती है।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

घ) इस में दो बात है-एक तो नगर भर में राजा के न्याव के डर से कोई मुटाता ही नहीं, दूसरे और किसी को पकड़ैं तो वह न जानैं क्या बात बनावै कि हमी लोगों के सिर कहीं न घहराय और फिर इस राज में साधु महात्मा इन्हीं लोगों की तो दुर्दशा है, इस से तुम्हीं को फाँसी देंगे।

2. निम्नलिखित गद्यांशो में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या करें:

i) दुहाई परमेश्वर की, अरे मैं नाहक मारा जाता हूँ! अरे यहाँ बड़ा ही अन्धेर है, अरे गुरु जी महाराज का कहा मैंने न माना उस का फल मुझ को भोगना पड़ा। गुरु जी कहां हौ! आओ, मेरे प्राण बचाओ, अरे मैं बेअपराध मारा जाता हूँ गुरु जी गुरु जी-
(गोबर्धन दास चिल्लाता है,

ii) जहाँ न धर्म न बुद्धि नहिं, नीति न सुजन समाज।
ते ऐसहि आपुहि नसे, जैसे चौपटराज॥

iii) 'मैं केवल यही कहना चाहती हूं कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-संपत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने का जो अभ्यास बना लिया है, वह मेरे साथ नहीं चल सकता।'

iv) प्रेम का नाम न लो। वह एक पीड़ा थी, जो छूट गई। उसकी कसक भी धीरे-धीरे दूर हो जाएगी। राजा, मैं तुम्हें प्यार नहीं करती। मैं तो दर्प में दीप्त तुम्हारी महत्वमयी पुरुष-मूर्ति की पुजारिन थी, जिसमें पृथ्वी पर अपने पैरों से खड़े रहने के दृढ़ता थी। इस स्वार्थ-मलिन कलुष से भरी मूर्ति से मेरा परिचय नहीं।

भाग- दो

3 . अंधेर नगरी में भारतेंदु युगीन विसंगतियों का चित्रण करें।

4 . नुक्कड़ नाटक औररेडियो नाटक पर सारगर्भित नोट लिखें।

भाग – तीन

5. जयशंकर प्रसाद की नाट्य यात्रा में ध्रुवस्वामिनी का स्थान निर्धारित करें।

6. ध्रुवस्वामिनी नाटक की भाषा शैली स्पष्ट करें।

भाग – चार

7. आठवां सर्ग नाटक की अभिनेयता को स्पष्ट करें ।

8. आठवां सर्ग नाटक की भाषा शैली स्पष्ट करें ।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Exam Code: 222803 Paper Code: 3155

Programme: Master of Arts (Hindi) Semester III

Course Title: प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Course Code: MHIL-3261

समय: 3 घन्टे कुल अंक: 70

नोट: यह प्रश्न पत्र चार भागों में विभाजित है। भाग एक,दो,तीन एवं चार में पूछे गए दो-दो प्रश्नों में से एक प्रश्न करना अनिवार्य है। पाँचवाँ प्रश्न विधीयर्थी किसी भी भाग से कर सकता है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का है।

भाग – एक

नोट : निम्नलिखित में से किन्ही दो पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करें।

1. क) तरवर से इक तिरिया उतरी उसने बहुत रिझाया
बाप का उससे नाम जो पूछा आधा नाम बताया
आधा नाम पिता पर प्यारा बूझ पहेली मोरी
अमीर ख़ुसरो यूँ कहेम अपना नाम नबोली

ख) जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान ।

ग) अगहन देवस घटा निसि बाढ़ी। दूभर दुःख सो जाइ किमि काढ़ी॥
अब धनि देवस बिरह भा राती। जरै बिरह ज्यों दीपक बाती॥
काँपा हिया जनावा सीऊ। तौ पै जाइ होइ सँग पीऊ॥
घर घर चीर रचा सब काहूँ। मोर रूप रंग लै गा नाहूँ॥

घ) एक दिवस पून्यो तिथि आई। मानसरोदक चली नहाई॥
पदमावति सब सखी बुलाई। जनु फुलवारि सबै चलि आई॥
कोइ चंपा कोइ कुंद सहेली। कोई सु केत, करना, रस बेली॥
कोइ सु गुलाल सुदरसन राती। कोई सो बकावरि-बकुचन भाँती॥

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

कोइ सो मौलसिरि, पुहपावती। कोई जाही जूही सेवती॥
कोई सोनज़रद, कोइ केसर। कोइ सिंगारहार नागेसर॥
कोइ कूजा सदबर्ग चमेली। कोई कदम सुरस रस बेली॥

नोट : निम्नलिखित में से किन्ही दो पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करें।

2. क) घूम घुमेला लहँगा पहिने,
एक पाँव से रहे खड़ी
आठ हात हैं उस नारी के,
सूरत उसकी लगे परी ।
सब कोई उसकी चाह करे है,
मुसलमान हिन्दू छत्री ।
खुसरो ने यह कही पहेली,
दिल में अपने सोच जरी ।

ख) सखी एक तेइ खेल न जाना। भै अचेत मनिहार गवाँना॥
कवँल डार गहि भै बेकरारा। कासों पुकारौं ओपन हारा॥
कित खेलै आइउँ एहि साथा। हार गँवाइ चलिउँ लेइ हाथा॥
घर पैठत पूँछब यह हारू। कौन उतर पाउब पैसारू॥

ग) पदमावति तेहि जोग सँजोगा। परी पेम वस गहें वियोगा॥
नींद न परे रैनि जौं आवा। सेज केंवाच जानू कोइ लावा॥
दहै चंद औ चंदन चोरू। दगध करें तन बिरह गँभोरू॥
कलप समान रैनि तेहि वाढ़ी। तिल तिल भर जुग जुग जिमि गाढ़ी॥

घ) कबीर सुता क्या करे, जागी न जपे मुरारी ।
एक दिन तू भी सोवेगा, लम्बे पाँव पसारी।।

भाग – दो

3. हिन्दी के आदि कवि : अमीर खुसरो को व्याख्यायित करें।
4. अमीर खुसरो के काव्य की भाषा स्पष्ट करें ।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

भाग –तीन

5. कबीर का सामाजिक दृष्टिकोण स्पष्ट करें।
6. कबीर का साहित्यिक परिचय दें।

भाग -चार

7. पद्मावत का महाकाव्यत्व स्पष्ट करें ।
8. जायसी काव्य में प्रेमाभिव्यंजना स्पष्ट करें ।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Exam Code: 222803 Paper Code: 3156

Programme: Master of Arts (Hindi) Semester III

Course Title: आधुनिक गद्य साहित्य

Course code: MHIL-3262

समय: 3 घन्टे कुल अंक: 70

नोट: यह प्रश्न पत्र चार भागों में विभाजित है। भाग एक,दो,तीन एवं चार में पूछे गए दो-दो प्रश्नों में से एक करना अनिवार्य है। पाँचवाँ प्रश्न विद्यार्थी किसी भी भाग से कर सकता है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का है।

भाग – एक

नोट : निम्नलिखित में से किन्ही दो गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करें।

1. क) सीढ़ियों पर आहट हुई और अपने कमरे तक पहुँचकर ख़त्म हो गई। खाने के बर्तन उठ गए। मैं उठा नहीं। दोबारा कॉफ़ी पी लेने के बाद भी वहीं बैठा रहा। एकाएक मन में आया कि किसी छोटे,से परिचय से मन में इतनी दुविधा उपजा लेना कम छोटी दुर्बलता नहीं है। आख़िर किसी से मिल ही लिया हूँ तो उसके लिए ऐसा-सा क्यों हुआ जा रहा हूँ।

ख) छोटे गोल मुख की तुलना में कुछ अधिक चौड़ा लगनेवाला, पर दो काली रूखी लटों से सीमित ललाट, बचपन और प्रौढ़ता को एक साथ अपने भीतर बंद कर लेने का प्रयास-सा करती हुई, लंबी बरौनियोंवाली भारी पलकें और उनकी छाया में डबडबाती हुई-सी आँखें, उस छोटे मुख के लिए भी कुछ छोटी सीधी-सी नाक और मानो अपने ऊपर छपी हुई हँसी से विस्मित होकर कुछ खुले रहनेवाले ओठ समय के प्रवाह से फीके भर हो सके हैं, धुल नहीं सके।

ग) एक कामयाब पार्टी वह है, जिसमें ड्रिंक कामयावी से चल जाएँ। शामनाथ की पार्टी सफलता के शिखर चूमने लगी। वार्तालाप उसी रौ में बह रहा था, जिस रौ में गिलास भरे जा रहे थे। कहीं कोई रूकावट न थी, कोई अड़चन न थी।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

घ) धनिया इतनी व्यवहार-कुशल न थी। उसका विचार था कि हमने ज़मींदार के खेत जोते हैं, तो वह अपना लगान ही तो लेगा। उसकी ख़ुशामद क्यों करें, उसके तलवे क्यों सहलायें। यद्यपि अपने विवाहित जीवन के इन बीस बरसों में उसे अच्छी तरह अनुभव हो गया था कि चाहे कितनी ही कतर-ब्योंत करो, कितना ही पेट-तन काटो, चाहे एक-एक कौड़ी को दाँत से पकड़ो; मगर लगान बेबाक़ होना मुश्किल है। फिर भी वह हार न मानती थी, और इस विषय पर स्त्री-पुरुष में आये दिन संग्राम छिड़ा रहता था।

नोट : निम्नलिखित में से किन्ही दो पद्याशों की सप्रसंग व्याख्या करें।

2. I) और उस एक क्षण के लिए प्रकाश के हृदय की धड़कन जैसे रुकी रही। कितना विचित्र था वह क्षण—आकाश से टूटकर गिरे हुए नक्षत्र जैसा! कोहरे के वक्ष में एक लकीर-सी खींचकर वह क्षण सहसा व्यतीत हो गया।
कोहरे में से गुज़रकर जाती हुई आकृतियों को उसने एक बार फिर ध्यान से देखा। क्या यह संभव था कि व्यक्ति की आँखें इस हद तक उसे धोखा दें? तो जो कुछ वह देख रहा था, वह यथार्थ ही नहीं था?

II) उसे मै अपने घर में खींच लाई अवश्य; पर न ऊपर के खण्ड में माँ के पास ले जा सकी और न छिपाने का स्थान खोज सकी। इतने में दीवारें लाँघ कर आने वाले, पंडिताइन चाची के उग्र स्वर ने भय से हमारी दिशाएं रूँध दीं, इसी से हड़बडाहट में हम दोनों उस कोठरी में जा घुसीं, जिसमें गाय के लिए घास भरी जाती थी। मुझे तो घास की पत्तियाँ भी चुभ रही थीं, कोठरी का अंधकार भी कष्ट दे रहा था; पर बिंदा अपने जले पैरों को घास में छिपाये और दोनों ठंडे हाथें से मेरा हाथ दबाये ऐसे बैठी थी, मानों घास का चुभता हुआ ढेर रेशमी बिछोना बन गया हो।

III) होरी लाठी कन्धे पर रखकर घर से निकला, तो धनिया द्वार पर खड़ी उसे देर तक देखती रही। उसके इन निराशा-भरे शब्दों ने धनिया के चोट खाये हुए हृदय में आतंकमय कम्पन-सा डाल दिया था। वह जैसे अपने नारीत्व के सम्पूऱ्र् तप और व्रत से अपने पति को अभय-दान दे रही थी। उसके अन्तःकरण से जैसे आशीर्वादों का व्यूह-सा निकल कर होरी को अपने अन्दर छिपाये लेता था। विपन्नता के इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी। इन असंगत शब्दों ने यथार्थ के निकट होने पर

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

भी मानो झटका देकर उसके हाथ से वह तिनके का सहारा छीन लेना चाहा बिल्क यथार्थ के निकट होने के कारण ही उनमें इतनी वेदना-शक्ति आ गयी थी।

IV) किसान पक्का स्वार्थी होता है, इसमें सन्देह नहीं। उसकी गाँठ से रिश्वत के पैसे बड़ी मुश्किल से निकलते हैं, भाव-ताव में भी वह चौकस होता है, ब्याज की एक-एक पाई छुड़ाने के लिए वह महाजन की घंटों चिरौरी करता है, जब तक पक्का विश्वास न हो जाय, वह किसी के फुसलाने में नहीं आता, लेकिन उसका सम्पूर्ण जीवन प्रकृति से स्थायी सहयोग है। वृक्षों में फल लगते हैं, उन्हें जनता खाती है; खेती में अनाज होता है, वह संसार के काम आता है; गाय के थन में दूध होता है, वह ख़ुद पीने नहीं जाती दूसरे ही पीते हैं; मेघों से वर्षा होती है, उससे पृथ्वी तृप्त होती है। ऐसी संगति में कुत्सित स्वार्थ के लिए कहाँ स्थान। होरी किसान था और किसी के जलते हुए घर में हाथ सेंकना उसने सीखा ही न था।

भाग – दो

3. गोदान: कृषक जीवन की त्रासदी स्पष्ट करें।
4. उपन्यास के तत्वों का उल्लेख करें।

भाग – तीन

5. खोई हुई दिशाएँ कहानी की विशेषताएँ स्पष्ट करें।
6. समकालीन कहानी की विशेषताएँ स्पष्ट करें।

भाग - चार

7. रेखाचित्र के तत्व स्पष्ट करें।
8. रामा रेखाचित्र का उद्देश्य स्पष्ट करें।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Exam Code: 222803 Paper Code: 3157

Programme: Master of Arts (Hindi) Semester – III

Course Title: भाषा विज्ञान और देवनागरी लिपि

Course code: MHIL-3263

समय: 3 घन्टे कुल अंक: 70

नोट: कुल पाँच प्रश्न करें। भाग एक,दो,तीन एवं चार में पूछे गए दो-दो प्रश्नों में से एक प्रश्न करना अनिवार्य है। पाँचवाँ प्रश्न विद्यार्थी किसी भी भाग से कर सकता है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का है।

भाग – एक

1. भाषा की परिभाषा बताते हुए उसकी विशेषताएं बताएं।
2. भाषा का परिवारिक वर्गीकरण स्पष्ट करें।

भाग – दो

3. ध्वनि परिवर्तन के कारण बताएं ।
4. रूप परिवर्तन की दिशाएं बताएं।

भाग – तीन

5. आधुनिक भाषा विज्ञान की प्रवृत्तियाँ बताएँ।
6. वैदिक तथा लौकिक संस्कृत का परिचय दें।

भाग – चार

7. हिन्दी का भौगोलिक विस्तार स्पष्ट करें।
8. देवनागरी लिपि का स्वरूप बताते हुए उसकी विशेषताएँ स्पष्ट करें।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar
Lib - 15-12-2025 K.M.V. (EVE)

Exam Code: 222803 **Paper Code: 3158**

Programme: Master of Arts (Hindi) Semester – III

Course Title: पत्रकारिता प्रशिक्षण

Course code: MHIL-3264

समय: 3 घन्टे **कुल अंक: 70**

नोट: कुल पाँच प्रश्न करें। भाग एक, दो, तीन एवं चार में पूछे गए दो-दो प्रश्नों में से एक प्रश्न करना अनिवार्य है। पाँचवाँ प्रश्न विद्यार्थी किसी भी भाग से कर सकता है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का है।

भाग – एक

प्र.1- पत्रकारिता के स्वरुप और प्रकारों पर प्रकाश डालें |
प्र.2-समाचार संकलन तथा लेखन के प्रमुख आयामों को स्पष्ट कीजिए |

भाग – दो

प्र.3- समाचार पत्रों के विभिन्न सतम्भों की योजना से अवगत कराएं |
प्र.4- संवाददाता की अहर्ता और कार्यपद्धति का परिचय दें |

भाग – तीन

प्र.5-पत्रकारिता के प्रबंधन पर विस्तारपूर्वक विचार कीजिए |
प्र.6-आकाशवाणी (रेडियो) के विभिन्न कार्यक्रमों का परिचय देते हुए प्रसारण की विशेषताओं पर प्रकाश डालें |

भाग – चार

प्र.7-मुक्त प्रेस की अवधारणा पर विचार करें |
प्र.8-प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के चतुर्थ सतम्भ के रूप में पत्रकारिता के महत्व पर विचार कीजिए |

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Exam Code: 222803 Paper Code: 3159

Programme: Master of Arts (Hindi) Semester – III

Course Title: Hindi Kahani

Course Code: MHIL – 3265 (Opt.-III)

Time Allowed: 3 Hours Maximum Marks: 70

आवश्यक निर्देश: प्रश्न-पत्र के चार भाग हैं । प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का 1000 शब्दों में उत्तर देना अनिवार्य है । पाँचवां प्रश्न किसी भी भाग में से करें । प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का है।

भाग – I

1. व्याख्या करें –
   i. मेरी जीभ जल जाय, बेटा, तुमसे ज़ेवर लूँगी? मेरे मुँह से यूँ ही निकल गया। जो होते, तो लाख बार पहनती! (7 अंक)
   ii. जहां कहीं किसी नई आबादी की योजना पनपने लगती, तो सैकड़ों मज़दूर खिंचे हुए, अपने फूस के छप्पर कन्धों पर उठाए, वहां जा पहुंचते, और उसी की बगल में अपनी झोंपड़ों की बस्ती खड़ी कर लेते और जब वह नई आबादी बनकर तैयार हो जाती, तो फिर मज़दूरों की टोलियां अपने फूस के छप्पर उठाए, किसी दूसरी आबादी की नींव रखने चल पड़तीं । मगर ज्योंही बरसात के बादल आकाश में मंडराने लगते, तो सब काम ठप्प हो जाता, और मज़दूर अपने झोंपड़ों में बैठे, आकाश को देखते हुए, चौमासे के दिन काटने लगते । (7 अंक)
2. व्याख्या करें –
   i. फिर देखा, बारिश थमी हुई है पर आकाश अब भी काफी गुस्सैल नजर आ रहा है। पूरा बरसा नहीं, उसने सोचा, और फिर सड़क थाम ली। (7 अंक)
   ii. उसे लगा, जाने से पहले एक बार वह फिर सारे आदेशों को दोहराएगा, पर नहीं। गाड़ी स्टार्ट करके खिड़की से ज़रा-सा हाथ निकालकर हलके से हिलाते हुए कहा- 'अच्छा, बा... बाई, तो उसे खयाल आया कि यह तो उसकी आदत थी कि गाड़ी में बैठकर चलने से पहले वह नौकर के सामने बताए हुए सारे काम फिर से दोहरा दिया करती थी। (7 अंक)

भाग – II

3. हिन्दी कहानी की विकास यात्रा पर निबंध लिखें । (14)
4. 'अमृतसर आ गया है' कहानी की भाषा-शैली के आधार पर समीक्षा करें । (14)

भाग – III

5. 'हरी बिंदी' कहानी में चित्रित नारी मनोविज्ञान पर टिप्पणी लिखें । (14)
6. 'साठ साल की औरत' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालें । (14)

भाग – IV

7. 'नई नौकरी' कहानी का कथ्य स्पष्ट करें । (14)
8. कहानीकार के रूप में 'मन्नू भंडारी' का परिचय दें । (14)